

ResearchPro International Multidisciplinary Journal



Vol- 2, Issue- 3, July-September 2026

ISSN (O)- 3107-9679

Email id: editor@researchprojournal.com

Website- www.researchprojournal.com

उत्तराखंड का सामरिक महत्त्व: 1947 से वर्तमान तक मुकुल कुमार

पूर्व अस्सिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं राष्ट्रीय सुरक्षा विभाग, माँ शाकुम्भरी विश्वविद्यालय, सहारनपुर

Article Info: (Recieved- 08/02/2026, Accept- 08/04/2026, Published- 03/07/2026)

DOI- [10.70650/rpimj.2026v2i300002](https://doi.org/10.70650/rpimj.2026v2i300002)

सारांश—

उत्तराखंड भारत का एक सीमावर्ती हिमालयी राज्य है, जिसका सामरिक महत्त्व स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से निरंतर बढ़ता गया है। उत्तर में चीन (तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र) तथा पूर्व में नेपाल से लगी अंतरराष्ट्रीय सीमाएँ, हिमालयी दर्रे, गंगा एवं यमुना जैसी महत्त्वपूर्ण नदियों का उद्गम, ऊँचाई वाले संवेदनशील क्षेत्र तथा उत्तर भारत की सुरक्षा में इसकी केंद्रीय भूमिका इसे राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण बनाती है। 1962 के भारत-चीन युद्ध के पश्चात उत्तराखंड की सामरिक उपयोगिता और अधिक स्पष्ट हुई, जिसके परिणामस्वरूप सीमा सड़क संगठन (BRO), भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP), अग्रिम सैन्य चौकियों, वायुसेना अड्डों तथा सीमा अवसंरचना के विकास पर विशेष बल दिया गया। वर्तमान समय में उत्तराखंड केवल सीमा सुरक्षा का क्षेत्र नहीं, बल्कि भारत की हिमालयी सुरक्षा नीति, जल सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, रक्षा लॉजिस्टिक्स, धार्मिक कूटनीति तथा इंडो-पैसिफिक रणनीतिक दृष्टिकोण का भी महत्त्वपूर्ण अंग बन चुका है। प्रस्तुत शोध-लेख में स्वतंत्रता के बाद उत्तराखंड के सामरिक महत्त्व के ऐतिहासिक विकास, राष्ट्रीय सुरक्षा में इसकी भूमिका, वर्तमान चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द— उत्तराखंड, राष्ट्रीय सुरक्षा, सामरिक महत्त्व, भारत-चीन सीमा, हिमालय, सीमा प्रबंधन, रक्षा नीति।

प्रस्तावना—

किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीय सुरक्षा उसके भौगोलिक स्वरूप, प्राकृतिक संसाधनों, सीमाओं, सामरिक अवसंरचना तथा पड़ोसी देशों के साथ संबंधों पर निर्भर करती है। भारत के संदर्भ में हिमालय केवल एक प्राकृतिक पर्वतमाला नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा की प्रथम रक्षा-पंक्ति के रूप में माना जाता है। हिमालय का मध्य भाग, जहाँ वर्तमान उत्तराखंड स्थित है, ऐतिहासिक रूप से भारत, तिब्बत एवं मध्य एशिया के मध्य व्यापार, संस्कृति तथा सामरिक संपर्क का प्रमुख मार्ग रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात बदलती भू-राजनीतिक परिस्थितियों, विशेषकर चीन के उदय, तिब्बत के राजनीतिक परिवर्तन, 1962 के भारत-चीन युद्ध तथा वर्तमान सीमा विवादों ने उत्तराखंड के सामरिक महत्त्व को अत्यधिक बढ़ा दिया।

उत्तराखंड का गठन 9 नवम्बर 2000 को हुआ, किंतु इसका सामरिक महत्त्व भारत की स्वतंत्रता से ही विद्यमान रहा है। राज्य की लगभग 350 किलोमीटर लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा चीन (तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र) तथा लगभग 275 किलोमीटर सीमा नेपाल के साथ लगती है। यह क्षेत्र मध्य हिमालय में स्थित होने के कारण उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों की सुरक्षा, सीमाई निगरानी तथा सामरिक आवाजाही की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त लिपुलेख, माना, नेलांग तथा बाराहोटी जैसे सीमावर्ती क्षेत्र भारत-चीन संबंधों में विशेष रणनीतिक महत्त्व रखते हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत की सुरक्षा नीति में उत्तराखंड का महत्व प्रारम्भिक वर्षों में अपेक्षाकृत सीमित था क्योंकि तत्कालीन विदेश नीति का आधार पंचशील, गुटनिरपेक्षता तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व था। किंतु 1950 में तिब्बत पर चीन के नियंत्रण तथा उसके पश्चात सीमाई गतिविधियों में वृद्धि ने हिमालयी क्षेत्र की सुरक्षा के प्रति भारत की रणनीतिक सोच को प्रभावित करना प्रारम्भ किया। 1962 के भारत-दृचीन युद्ध ने यह स्पष्ट कर दिया कि हिमालय केवल प्राकृतिक अवरोध नहीं, बल्कि प्रभावी सैन्य अवसंरचना, सड़क नेटवर्क तथा सतत सीमा प्रबंधन की भी माँग करता है।

आज उत्तराखंड भारत की समग्र राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति का अभिन्न अंग बन चुका है। यहाँ भारतीय सेना, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP), सीमा सड़क संगठन (BRO), भारतीय वायुसेना तथा अन्य सुरक्षा एजेंसियाँ सीमाओं की निगरानी, सामरिक अवसंरचना के विकास तथा आपदा प्रबंधन में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। उत्तराखंड की सामरिक उपयोगिता केवल रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जल सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, धार्मिक पर्यटन, सीमा क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास तथा भारत की हिमालय नीति का भी महत्वपूर्ण आधार है।

उत्तराखंड का भौगोलिक एवं सामरिक परिचय

उत्तराखंड भारत के उत्तरी भाग में स्थित एक हिमालयी राज्य है, जिसका कुल क्षेत्रफल लगभग 53,483 वर्ग किलोमीटर है। इसके उत्तर में चीन (तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र), पूर्व में नेपाल, पश्चिम में हिमाचल प्रदेश तथा दक्षिण में उत्तर प्रदेश स्थित हैं। राज्य का अधिकांश भाग पर्वतीय है तथा यहाँ हिमालय की महान, मध्य तथा शिवालिक पर्वत श्रेणियाँ विस्तृत हैं। यह भौगोलिक स्थिति उत्तराखंड को प्राकृतिक दृष्टि से सुरक्षित बनाती है, किंतु दुर्गम भू-भाग, सीमित संपर्क मार्ग तथा प्रतिकूल जलवायु इसे सैन्य दृष्टि से चुनौतीपूर्ण भी बनाते हैं।

राज्य की भौगोलिक संरचना उत्तर भारत की जल सुरक्षा से भी सीधे जुड़ी हुई है। गंगा एवं यमुना जैसी महान नदियों का उद्गम उत्तराखंड के हिमालयी हिमनदों से होता है। इन नदियों पर आधारित जल संसाधन, सिंचाई, जलविद्युत उत्पादन तथा पेयजल व्यवस्था उत्तर भारत के करोड़ों लोगों के जीवन से जुड़ी हुई है। इस दृष्टि से उत्तराखंड की सुरक्षा केवल सीमाई सुरक्षा का प्रश्न नहीं, बल्कि भारत की पर्यावरणीय एवं जल सुरक्षा का भी महत्वपूर्ण पक्ष है।

उत्तराखंड का एक अन्य सामरिक आयाम इसकी धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति है। बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, आदि कैलाश तथा कैलाश-मानसरोवर यात्रा मार्ग राज्य को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय धार्मिक महत्व प्रदान करते हैं। सीमावर्ती क्षेत्रों में तीर्थयात्रा, स्थानीय आबादी की निरंतर उपस्थिति तथा सड़क संपर्क का विकास अप्रत्यक्ष रूप से सीमा सुरक्षा को भी सुदृढ़ करता है। यही कारण है कि भारत सरकार ने सीमावर्ती गाँवों के विकास, सड़क निर्माण, संचार सुविधाओं तथा पर्यटन अवसंरचना को राष्ट्रीय सुरक्षा से भी जोड़ा है।

सैन्य दृष्टि से उत्तराखंड भारतीय सेना की अनेक महत्वपूर्ण इकाइयों का केंद्र है। लैंसडाउन में गढ़वाल राइफल्स रेजिमेंटल सेंटर तथा रानीखेत में कुमाऊँ रेजिमेंटल सेंटर भारतीय सेना की दो प्रतिष्ठित रेजिमेंटों के प्रशिक्षण एवं प्रशासनिक केंद्र हैं। इनके अतिरिक्त देहरादून स्थित भारतीय सैन्य अकादमी देश के साथ-साथ अनेक मित्र देशों के सैन्य अधिकारियों के प्रशिक्षण का प्रमुख संस्थान है। इससे उत्तराखंड केवल सीमाई राज्य ही नहीं, बल्कि भारत के सैन्य नेतृत्व एवं सैन्य प्रशिक्षण का भी प्रमुख केंद्र बन गया है।

इन सभी तथ्यों से स्पष्ट है कि उत्तराखंड का सामरिक महत्व केवल उसकी भौगोलिक स्थिति तक सीमित नहीं है। इसकी सीमाएँ, हिमालयी दर्रे, जल संसाधन, सैन्य संस्थान, धार्मिक मार्ग, सीमावर्ती समुदाय तथा सामरिक अवसंरचना मिलकर इसे भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आधार बनाते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात बदलती भू-राजनीतिक परिस्थितियों ने इस महत्व को निरंतर बढ़ाया है, जिसके कारण आज उत्तराखंड भारत की हिमालयी सुरक्षा नीति का केंद्रीय स्तंभ बन चुका है।

1947 के बाद उत्तराखंड का सामरिक विकास

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात उत्तराखंड (तत्कालीन उत्तर प्रदेश का पर्वतीय क्षेत्र) भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण अंग था, यद्यपि प्रारम्भिक वर्षों में इसकी सामरिक उपयोगिता को वर्तमान स्तर पर नहीं आँका गया। उस समय भारत की विदेश नीति का आधार गुटनिरपेक्षता, पंचशील तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व था, जिसके कारण हिमालय को प्राकृतिक सुरक्षा कवच के रूप में देखा जाता था। परिणामस्वरूप सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़क निर्माण, सैन्य तैनाती तथा सीमा अवसंरचना के विकास पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया।

तिब्बत में राजनीतिक परिवर्तन और सामरिक प्रभाव

वर्ष 1950 में तिब्बत पर चीन के नियंत्रण ने भारत की उत्तरी सीमाओं की सामरिक स्थिति को पूरी तरह बदल दिया। इससे पूर्व तिब्बत भारत और चीन के मध्य एक बफर (Buffer) क्षेत्र के रूप में कार्य करता था, किंतु तिब्बत पर चीन का प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित होने के बाद भारत की सीमा सीधे चीन से जुड़ गई। उत्तराखंड के लिपुलेख, माना, नेलांग तथा बाराहोटी जैसे सीमावर्ती क्षेत्रों का सामरिक महत्व अचानक बढ़ गया। इसके बावजूद प्रारम्भिक वर्षों में सीमाई अवसंरचना का विकास अपेक्षाकृत धीमी गति से हुआ, जिसका प्रभाव 1962 के युद्ध के समय स्पष्ट रूप से दिखाई दिया।

1962 का भारत-चीन युद्ध और उत्तराखंड

अक्टूबर-नवंबर 1962 का भारत-चीन युद्ध उत्तराखंड की सामरिक भूमिका के इतिहास में सबसे निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ। यद्यपि युद्ध का मुख्य केंद्र पूर्वोत्तर सीमांत क्षेत्र (वर्तमान अरुणाचल प्रदेश) तथा लद्दाख था, फिर भी उत्तराखंड के सीमावर्ती क्षेत्रों में भी चीन की सैन्य गतिविधियाँ बढ़ीं। बाराहोटी, माना तथा नेलांग क्षेत्र की सामरिक संवेदनशीलता ने भारत सरकार को यह अनुभव कराया कि हिमालय केवल प्राकृतिक सुरक्षा कवच नहीं है, बल्कि प्रभावी सड़क नेटवर्क, सैन्य रसद, अग्रिम चौकियों तथा निरंतर निगरानी की आवश्यकता है। युद्ध के बाद भारत ने हिमालयी सीमाओं की सुरक्षा के लिए व्यापक सुधार प्रारम्भ किए। सीमा सड़क संगठन (BRO) को सीमावर्ती क्षेत्रों में रणनीतिक सड़कों के निर्माण का दायित्व सौंपा गया। उत्तरकाशी, चमोली तथा पिथौरागढ़ जिलों में सड़क संपर्क, पुल, सैन्य लॉजिस्टिक मार्ग तथा संचार नेटवर्क का तीव्र विस्तार किया गया। इन प्रयासों ने उत्तराखंड को उत्तर भारत के सबसे महत्वपूर्ण सामरिक क्षेत्रों में परिवर्तित कर दिया।

भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP) की भूमिका

1962 के युद्ध के पश्चात भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP) को और अधिक सुदृढ़ किया गया तथा उत्तराखंड के सीमावर्ती क्षेत्रों में इसकी तैनाती बढ़ाई गई। ITBP ने सीमा निगरानी, गश्त, पर्वतीय युद्ध प्रशिक्षण, हिमालयी आपदा प्रबंधन तथा स्थानीय समुदायों के साथ समन्वय स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज उत्तराखंड में ITBP की अनेक अग्रिम चौकियाँ वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) के निकट कार्यरत हैं, जो राष्ट्रीय सुरक्षा की प्रथम पंक्ति का निर्माण करती हैं।

सैन्य संस्थानों का विस्तार

1962 के पश्चात उत्तराखंड में सैन्य प्रशिक्षण एवं प्रशासनिक संस्थानों के महत्व में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई। देहरादून स्थित भारतीय सैन्य अकादमी (IMA) ने भारतीय सेना के अधिकारियों के प्रशिक्षण के साथ-साथ अनेक मित्र देशों के सैन्य अधिकारियों को भी प्रशिक्षित करना प्रारम्भ किया। लैंसडाउन स्थित गढ़वाल राइफल्स रेजिमेंटल सेंटर तथा रानीखेत स्थित कुमाऊँ रेजिमेंटल सेंटर भारतीय सेना की दो अत्यंत प्रतिष्ठित रेजिमेंटों के प्रमुख प्रशिक्षण केंद्र के रूप में विकसित हुए। इन संस्थानों ने न केवल सैन्य दक्षता को बढ़ाया, बल्कि उत्तराखंड को भारत की सैन्य परंपरा एवं नेतृत्व का प्रमुख केंद्र भी बनाया।

कारगिल युद्ध के बाद सामरिक परिवर्तन

1999 के कारगिल युद्ध ने पूरे हिमालयी क्षेत्र में सीमा प्रबंधन के स्वरूप को प्रभावित किया। यद्यपि युद्ध जम्मू-कश्मीर में हुआ, किंतु इसके बाद उत्तराखंड सहित संपूर्ण हिमालयी सीमा पर निगरानी, खुफिया समन्वय, उच्च हिमालयी सैन्य प्रशिक्षण तथा सामरिक अवसंरचना के विकास पर अधिक बल दिया गया। कारगिल समीक्षा समिति की अनुशंसाओं के अनुरूप सीमाई क्षेत्रों में आधुनिक संचार प्रणाली, निगरानी उपकरण तथा सैन्य समन्वय को सुदृढ़ किया गया।

उत्तराखंड में सैन्य अवसंरचना एवं सीमा प्रबंधन

उत्तराखंड की सामरिक स्थिति को प्रभावी बनाए रखने में सैन्य अवसंरचना तथा सीमा प्रबंधन की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। हिमालयी भू-भाग, ऊँचाई वाले दुर्गम क्षेत्र, प्रतिकूल जलवायु, सीमित जनसंख्या तथा अंतरराष्ट्रीय सीमाओं की संवेदनशीलता के कारण उत्तराखंड में सुरक्षा व्यवस्था केवल सैन्य तैनाती तक सीमित नहीं रह सकती। इसके लिए सड़क, पुल, सुरंग, संचार नेटवर्क, हवाई संपर्क, सीमा चौकियाँ, निगरानी प्रणाली, रसद प्रबंधन तथा स्थानीय समुदायों की भागीदारी जैसे अनेक आयामों का समन्वित विकास आवश्यक है। विशेषकर 1962 के भारत-चीन युद्ध के पश्चात भारत सरकार ने उत्तराखंड की सामरिक अवसंरचना के विकास

को राष्ट्रीय सुरक्षा की प्राथमिकताओं में सम्मिलित किया।

उत्तराखंड की अंतरराष्ट्रीय सीमा का अधिकांश भाग अत्यंत दुर्गम हिमालयी क्षेत्रों से होकर गुजरता है। चीन (तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र) से लगी सीमा मुख्यतः पिथौरागढ़, चमोली तथा उत्तरकाशी जनपदों में स्थित है, जबकि नेपाल के साथ राज्य की पूर्वी सीमा पिथौरागढ़ एवं चम्पावत जनपदों से होकर गुजरती है। इन सीमाओं की प्रभावी निगरानी के लिए भारतीय सेना, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP), सशस्त्र सीमा बल (SSB) तथा अन्य सुरक्षा एजेंसियाँ समन्वित रूप से कार्य करती हैं। चीन सीमा पर प्ज्ठच अग्रिम चौकियों का संचालन करती है, जबकि नेपाल सीमा पर SSB सीमा प्रबंधन एवं अवैध गतिविधियों की रोकथाम का कार्य करती है।

सीमा सड़क संगठन (BRO) उत्तराखंड की सामरिक अवसंरचना के विकास में सबसे महत्वपूर्ण संस्थाओं में से एक है। हिमालयी क्षेत्रों में सड़क निर्माण अत्यंत कठिन होने के बावजूद BRO ने सीमावर्ती क्षेत्रों को राष्ट्रीय राजमार्गों, सैन्य मार्गों तथा अग्रिम चौकियों से जोड़ने का व्यापक कार्य किया है। माना, लिपुलेख, नेलांग, जोशीमठ, धारचूला, मुनस्यारी तथा अन्य सीमावर्ती क्षेत्रों तक सर्वकालिक सड़क संपर्क स्थापित करने के प्रयासों ने भारतीय सेना की परिचालन क्षमता तथा रसद आपूर्ति को उल्लेखनीय रूप से सुदृढ़ किया है। सामरिक दृष्टि से ये सड़कें केवल सैनिक आवागमन के लिए ही नहीं, बल्कि आपदा प्रबंधन, सीमावर्ती गाँवों के विकास तथा नागरिक प्रशासन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

उत्तराखंड में भारतीय सेना की उपस्थिति ऐतिहासिक एवं सामरिक दोनों दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण है। देहरादून स्थित भारतीय सैन्य अकादमी देश का प्रमुख अधिकारी प्रशिक्षण संस्थान है, जहाँ भारतीय सेना के साथ-साथ अनेक मित्र देशों के कैंडेटों को भी प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। यह संस्थान भारत की सैन्य कूटनीति का भी एक प्रभावी माध्यम है। इसके अतिरिक्त लैंसडाउन स्थित गढ़वाल राइफल्स रेजिमेंटल सेंटर तथा रानीखेत स्थित कुमाऊँ रेजिमेंटल सेंटर भारतीय सेना की दो प्रतिष्ठित रेजिमेंटों के प्रशिक्षण एवं प्रशासनिक केंद्र हैं, जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद से विभिन्न युद्धों एवं सैन्य अभियानों में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

भारतीय वायुसेना भी उत्तराखंड की सामरिक सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राज्य के पर्वतीय क्षेत्रों में सैनिकों, हथियारों, रसद सामग्री तथा राहत कार्यों के लिए हेलीकॉप्टर एवं परिवहन विमानों का व्यापक उपयोग किया जाता है। आपदा प्रबंधन, सीमावर्ती चौकियों तक आवश्यक सामग्री पहुँचाने तथा आपातकालीन परिस्थितियों में त्वरित सैन्य प्रतिक्रिया के लिए वायुसेना की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उत्तराखंड का पर्वतीय भूगोल वायु परिवहन को सामरिक दृष्टि से और अधिक आवश्यक बना देता है।

सीमा प्रबंधन के क्षेत्र में आधुनिक निगरानी प्रणाली का उपयोग निरंतर बढ़ रहा है। उपग्रह आधारित निगरानी, ड्रोन, थर्मल इमेजिंग उपकरण, डिजिटल संचार प्रणाली, भू-स्थानिक सूचना प्रणाली (GIS) तथा वास्तविक समय निगरानी जैसी आधुनिक तकनीकों ने सीमाई सुरक्षा को अधिक प्रभावी बनाया है। हिमालयी क्षेत्रों में मौसम एवं भौगोलिक कठिनाइयों के कारण मानव गश्त के साथ-साथ तकनीकी निगरानी का महत्व निरंतर बढ़ रहा है।

वर्तमान समय में उत्तराखंड की सामरिक नीति का एक प्रमुख उद्देश्य सीमाई क्षेत्रों में अवसंरचना विकास तथा पर्यावरण संरक्षण के मध्य संतुलन स्थापित करना है। हिमालयी पारिस्थितिकी अत्यंत संवेदनशील है, इसलिए सड़क निर्माण, सुरंग परियोजनाओं तथा सैन्य अवसंरचना के विकास के साथ पर्यावरणीय प्रभावों का वैज्ञानिक मूल्यांकन भी आवश्यक है। राष्ट्रीय सुरक्षा की दीर्घकालिक सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि विकास, पर्यावरणीय संरक्षण तथा स्थानीय समुदायों के हितों के मध्य संतुलन किस प्रकार स्थापित किया जाता है।

समग्रतः उत्तराखंड की सैन्य अवसंरचना एवं सीमा प्रबंधन व्यवस्था स्वतंत्रता के पश्चात निरंतर विकसित हुई है। आज यह केवल सीमाओं की सुरक्षा का माध्यम नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, सीमावर्ती विकास, रक्षा कूटनीति, सैन्य प्रशिक्षण तथा सामरिक गतिशीलता का एक समन्वित मॉडल बन चुका है। बदलती वैश्विक भू-राजनीतिक परिस्थितियों, भारत-चीन सीमा पर बढ़ती गतिविधियों तथा आधुनिक युद्ध की बदलती प्रकृति को देखते हुए भविष्य में उत्तराखंड की सामरिक अवसंरचना और सीमा प्रबंधन का महत्व और अधिक बढ़ने की संभावना है।

उत्तराखंड का राष्ट्रीय सुरक्षा एवं रक्षा कूटनीति में योगदान

उत्तराखंड का योगदान केवल एक सीमावर्ती राज्य के रूप में ही नहीं, बल्कि भारत की समग्र राष्ट्रीय सुरक्षा, सैन्य परंपरा, रक्षा कूटनीति तथा रणनीतिक नीति-निर्माण में भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के

पश्चात उत्तराखंड ने सैनिक संसाधन, सैन्य नेतृत्व, सीमा सुरक्षा, रक्षा प्रशिक्षण, आपदा प्रबंधन, सामरिक अवसंरचना तथा अंतरराष्ट्रीय सैन्य सहयोग जैसे अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। हिमालयी भौगोलिक स्थिति, सीमावर्ती जनसंख्या की देशभक्ति तथा सैन्य परंपराओं ने उत्तराखंड को भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था का एक अभिन्न अंग बना दिया है।

उत्तराखंड को प्रायः सैनिकों की भूमि कहा जाता है। राज्य के गढ़वाल एवं कुमाऊँ क्षेत्रों से बड़ी संख्या में युवाओं ने भारतीय सेना, अर्द्धसैनिक बलों तथा अन्य सुरक्षा संगठनों में सेवा दी है। गढ़वाल राइफल्स तथा कुमाऊँ रेजिमेंट भारतीय सेना की दो ऐसी प्रतिष्ठित रेजिमेंट हैं, जिन्होंने स्वतंत्रता के पश्चात 1947-48, 1962, 1965, 1971, कारगिल युद्ध तथा संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों सहित अनेक सैन्य अभियानों में असाधारण साहस और वीरता का परिचय दिया। उत्तराखंड के अनेक सैनिकों को परमवीर चक्र, अशोक चक्र, महावीर चक्र, कीर्ति चक्र तथा अन्य वीरता पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जो राज्य की सैन्य परंपरा एवं राष्ट्रीय सुरक्षा में उसके योगदान को प्रमाणित करता है।

भारतीय सैन्य नेतृत्व के निर्माण में भी उत्तराखंड की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। देहरादून स्थित भारतीय सैन्य अकादमी देश का प्रमुख अधिकारी प्रशिक्षण संस्थान है। 1932 में स्थापित यह संस्थान स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय सेना के हजारों अधिकारियों को प्रशिक्षित कर चुका है। इसके अतिरिक्त एशिया, अफ्रीका तथा अन्य मित्र देशों के सैन्य अधिकारियों को भी यहाँ प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इस प्रकार भारतीय सैन्य अकादमी केवल राष्ट्रीय सुरक्षा का संस्थान नहीं, बल्कि भारत की रक्षा कूटनीति का भी एक प्रभावी माध्यम है, क्योंकि यहाँ प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले विदेशी अधिकारी अपने देशों में उच्च सैन्य पदों पर पहुँचकर भारत के साथ दीर्घकालिक सामरिक संबंधों को सुदृढ़ करते हैं।

उत्तराखंड का योगदान सीमा सुरक्षा के क्षेत्र में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। चीन तथा नेपाल से लगी अंतरराष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा के लिए भारतीय सेना, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस, सशस्त्र सीमा बल तथा अन्य सुरक्षा एजेंसियाँ निरंतर कार्यरत हैं। उत्तराखंड के सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी सीमा प्रबंधन को अधिक प्रभावी बनाती है। सीमावर्ती गाँवों के निवासी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने क्षेत्रों में निवास करते हुए प्रशासन एवं सुरक्षा बलों को महत्वपूर्ण स्थानीय सहयोग प्रदान करते हैं। यह सहयोग भारत की सीमा सुरक्षा व्यवस्था का एक अनिवार्य घटक है।

उत्तराखंड ने भारत की रक्षा कूटनीति को भी नई दिशा प्रदान की है। भारतीय सैन्य अकादमी में विदेशी सैन्य अधिकारियों का प्रशिक्षण, पर्वतीय युद्ध कौशल का आदान-प्रदान, संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा आपदा प्रबंधन सहयोग भारत की अंतरराष्ट्रीय रक्षा साझेदारियों को सुदृढ़ करते हैं। उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्र उच्च हिमालयी युद्ध प्रशिक्षण तथा पर्वतीय सैन्य अभ्यासों के लिए उपयुक्त माने जाते हैं, जिससे भारत को हिमालयी युद्धक क्षमता के विकास में विशेष लाभ प्राप्त होता है।

वर्तमान सामरिक चुनौतियाँ

यद्यपि उत्तराखंड की सामरिक स्थिति भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करती है, तथापि वर्तमान समय में राज्य अनेक नई चुनौतियों का सामना कर रहा है। इनमें सबसे प्रमुख चुनौती भारत-चीन सीमा पर बढ़ती सामरिक गतिविधियाँ हैं। वास्तविक नियंत्रण रेखा के निकट चीन द्वारा सीमा अवसंरचना, सड़कों, पुलों, सैन्य ठिकानों तथा संचार नेटवर्क का तीव्र विकास भारत के लिए निरंतर रणनीतिक चुनौती प्रस्तुत कर रहा है। इसके परिणामस्वरूप भारत को भी उत्तराखंड के सीमावर्ती क्षेत्रों में सामरिक अवसंरचना, सैन्य तैनाती तथा निगरानी क्षमता को निरंतर सुदृढ़ करना पड़ रहा है।

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती सीमावर्ती क्षेत्रों से हो रहा निरंतर पलायन है। अनेक सीमावर्ती गाँवों में जनसंख्या घटने से सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियाँ प्रभावित हुई हैं। जनशून्य होते गाँव दीर्घकाल में सीमा प्रबंधन एवं राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से भी चुनौती उत्पन्न कर सकते हैं। इसलिए सीमावर्ती क्षेत्रों में रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, डिजिटल संपर्क तथा आधारभूत सुविधाओं का विकास राष्ट्रीय सुरक्षा से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। जलवायु परिवर्तन भी उत्तराखंड की सामरिक सुरक्षा को प्रभावित कर रहा है। हिमनदों का तीव्र पिघलना, भूस्खलन, बादल फटना, हिमस्खलन तथा ग्लेशियल झीलों के फटने की घटनाएँ सीमावर्ती सड़कों, सैन्य चौकियों तथा संचार अवसंरचना के लिए नई चुनौतियाँ उत्पन्न कर रही हैं। इस कारण राष्ट्रीय सुरक्षा नीति में पर्यावरणीय सुरक्षा एवं

आपदा प्रबंधन को भी समान महत्व दिया जाने लगा है।

भविष्य की संभावनाएँ

बदलती वैश्विक भू-राजनीति तथा भारतदृचीन संबंधों के परिप्रेक्ष्य में उत्तराखंड का सामरिक महत्व भविष्य में और अधिक बढ़ने की संभावना है। भारत सरकार द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़क, सुरंग, पुल, आधुनिक संचार नेटवर्क, ड्रोन निगरानी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सीमा प्रबंधन तथा उपग्रह निगरानी जैसी आधुनिक तकनीकों के उपयोग पर विशेष बल दिया जा रहा है। इससे उत्तराखंड की सामरिक क्षमता में गुणात्मक वृद्धि होगी। भविष्य में वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम के माध्यम से सीमावर्ती गाँवों का सामाजिक एवं आर्थिक विकास राष्ट्रीय सुरक्षा को नया आधार प्रदान करेगा। सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यटन, डिजिटल कनेक्टिविटी तथा स्थानीय रोजगार के अवसर सीमावर्ती क्षेत्रों में जनसंख्या को बनाए रखने में सहायक होंगे, जिससे सीमा प्रबंधन और अधिक प्रभावी बनेगा। उत्तराखंड में रक्षा अनुसंधान, पर्वतीय युद्ध प्रशिक्षण, आपदा प्रबंधन तथा जलवायु सुरक्षा के क्षेत्र में विशेष संस्थानों की स्थापना भी भविष्य की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इससे राज्य केवल सीमाई सुरक्षा तक सीमित न रहकर हिमालयी रणनीतिक अध्ययन का राष्ट्रीय केंद्र भी बन सकता है। साथ ही भारतीय सैन्य अकादमी तथा अन्य सैन्य संस्थानों के माध्यम से भारत की रक्षा कूटनीति को और अधिक सुदृढ़ किया जा सकता है।

निष्कर्ष

उत्तराखंड का सामरिक महत्व उसकी भौगोलिक स्थिति, अंतरराष्ट्रीय सीमाओं, हिमालयी दर्रा, जल संसाधनों, सैन्य परंपरा तथा सामरिक अवसंरचना के कारण अत्यंत विशिष्ट है। स्वतंत्रता के पश्चात विशेषकर 1962 के भारतदृचीन युद्ध के बाद उत्तराखंड भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का एक केंद्रीय क्षेत्र बनकर उभरा। सीमा सड़क संगठन द्वारा विकसित अवसंरचना, भारतीय सेना एवं भारत-तिब्बत सीमा पुलिस की सक्रिय भूमिका, भारतीय सैन्य अकादमी का वैश्विक महत्व तथा सीमावर्ती क्षेत्रों का रणनीतिक विकास राज्य की सामरिक उपयोगिता को निरंतर सुदृढ़ कर रहे हैं। वर्तमान समय में उत्तराखंड केवल एक सीमावर्ती राज्य नहीं, बल्कि भारत की हिमालयी सुरक्षा, सीमा प्रबंधन, सैन्य प्रशिक्षण, रक्षा कूटनीति, जल सुरक्षा तथा आपदा प्रबंधन का एक समन्वित रणनीतिक केंद्र है। बदलती वैश्विक भू-राजनीतिक परिस्थितियों तथा भारतदृचीन संबंधों के संदर्भ में भविष्य में भी उत्तराखंड का सामरिक महत्व निरंतर बढ़ता रहेगा। इसलिए सीमावर्ती अवसंरचना, तकनीकी आधुनिकीकरण, पर्यावरणीय संतुलन, स्थानीय समुदायों की सहभागिता तथा राष्ट्रीय सुरक्षा के समन्वित दृष्टिकोण के माध्यम से उत्तराखंड को भारत की सामरिक शक्ति के एक सुदृढ़ स्तंभ के रूप में विकसित करना समय की आवश्यकता है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

सन्दर्भ—

1. सॉल बर्नार्ड कोहेन, जियोपॉलिटिक्स, द जियोग्राफी ऑफ इंटरनेशनल रिलेशन्स, 2015, पृ. 29–52.
2. श्रीनाथ राघवन, वार एंड पीस इन मॉडर्न इंडिया, ए स्ट्रैटेजिक हिस्ट्री ऑफ द नेहरू इयर्स, 2010, पृ. 273
3. उत्तराखंड सरकार, उत्तराखंड एट ए ग्लान्स, निदेशालय अर्थ एवं संख्या, देहरादून, नवीनतम संस्करण
4. बी. एल. शर्मा, जियोग्राफी ऑफ उत्तराखंड, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, 2012
5. मिनिस्ट्री ऑफ होम अफेयर्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम गाइडलाइंस, नई दिल्ली, 2023.
6. श्रीनाथ राघवन, वार एंड पीस इन मॉडर्न इंडियारू ए स्ट्रैटेजिक हिस्ट्री ऑफ द नेहरू इयर्स, परमानेंट ब्लैक, रानीखेत, 2010, पृ. 307–318.
7. कारगिल रिव्यू कमेटी, फ्रॉम सरप्राइज़ टू रिकन्सिलिएशन, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2000.
8. मिनिस्ट्री ऑफ डिफेंस, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, एनुअल रिपोर्ट 2024–25, नई दिल्ली, 2025, पृ. 13–46

9. मिनिस्ट्री ऑफ होम अफेयर्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, एनुअल रिपोर्ट 2023–24, नई दिल्ली, 2024.
10. मिनिस्ट्री ऑफ डिफेन्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, एनुअल रिपोर्ट 2024–25, नई दिल्ली, 2025, पृ. 98–126.
11. स्टीफन पी. कोहेन, इंडियारु इमर्जिंग पावर, ब्रकिंग्स इंस्टीट्यूशन प्रेस, वॉशिंगटन डी.सी., 2001, पृ. 271–315.
12. मिनिस्ट्री ऑफ डिफेन्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, एनुअल रिपोर्ट 2024–25, नई दिल्ली, 2025
13. मिनिस्ट्री ऑफ होम अफेयर्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, एनुअल रिपोर्ट 2023–24, नई दिल्ली, 2024.

Cite this Article

'मुकुल कुमार', "उत्तराखंड का सामरिक महत्व: 1947 से वर्तमान तक", ResearchPro International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3107-9679 (Online), Volume:2, Issue:3, July-September 2026.

“Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author.”